Year-6 Volume: III, July-September, 2024 Issue-23 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

9. राष्ट्रीय चेतना के संदर्भ में विभूति कहानी संग्रह का अध्ययन

विनोद कुमार सिंह
सहायक आचार्य
ए एन एस कॉलेज नबीनगर
मगध विश्वविद्यालय, बिहार
मो: 9968545470
ईमेल : vksingh.du@gmail.com

शोध सार

यह शोध-पत्र शिवपूजन सहाय के "विभूति कहानी संग्रह" में अभिव्यक्त राष्ट्रीय चेतना के विविध आयामों का विश्लेषण करता है। राष्ट्र, राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय चेतना की पारंपरिक एवं आधुनिक परिभाषाओं के आलोक में यह अध्ययन दर्शाता है कि शिवपूजन सहाय ने अपनी कहानियों के माध्यम से न केवल स्वतंत्रता संग्राम के नायकों की वीरता को चित्रित किया है, बल्कि स्त्री पात्रों, युवाओं एवं आम नागरिकों की राष्ट्रीय चेतना को भी उद्भासित किया है। मुण्डमाल, प्रायश्चित और कुंजी जैसी कहानियों के माध्यम से लेखन में राष्ट्र भक्ति, स्वावलंबन, स्त्री-सम्मान और सांस्कृतिक गौरव का उत्कृष्ट चित्रण किया गया है।

प्रमुख शब्द- राष्ट्रीय चेतना, स्वाधीनता संग्राम, स्त्री-बलिदान, स्वावलंबन, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

प्रस्तावना

भारत एक बहुधर्मी, बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश है, जिसकी आत्मा उसकी सांस्कृतिक चेतना और राष्ट्रीय भावना में समाहित है। यह चेतना समय-समय पर साहित्य, कला, राजनीति और सामाजिक आंदोलनों के माध्यम से प्रकट होती रही है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम ने न केवल राजनैतिक स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया, बल्कि एक समृद्ध सांस्कृतिक राष्ट्र की पुनर्परिकल्पना को भी जन्म दिया। इस परिप्रेक्ष्य में साहित्य का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है, जिसने जनता के मन में राष्ट्रीय चेतना का बीजारोपण किया और उसे विस्तार दिया।

हिन्दी साहित्य, विशेषतः कथा साहित्य, ने राष्ट्रवादी भावनाओं को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम प्रदान किया। स्वतंत्रता पूर्व और पश्चात की कहानियाँ केवल समाज के यथार्थ को नहीं दिखातीं, बल्कि उनमें राष्ट्रीयता, स्वाधीनता, आत्मसम्मान और सामाजिक न्याय जैसे तत्वों का भी सघन चित्रण होता है। इस क्रम में शिवपूजन सहाय का *"विभूति कहानी संग्रह"* विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिसमें भारतीय समाज की राष्ट्रीय चेतना, स्त्री सम्मान, युवा जागरूकता और आत्मबलिदान को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

शिवपूजन सहाय राष्ट्रवाद को केवल एक राजनीतिक विचार नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक और नैतिक दायित्व के रूप में देखते हैं। उनकी कहानियाँ ऐसे पात्रों से भरी पड़ी हैं, जो व्यक्तिगत सुखों को त्यागकर राष्ट्र के लिए समर्पित हो जाते

Year-6 Volume: III, July-September, 2024 Issue-23 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

हैं। मुण्डमाल की हाड़ा रानी, प्रायश्चित की आत्मबलिदानी स्त्री, और कुंजी के स्वावलंबन प्रेरित युवा, सभी शिवपूजन सहाय की उस राष्ट्रीय दृष्टि को प्रकट करते हैं जो भारत को केवल भू-भाग नहीं, अपितु एक जीवंत सांस्कृतिक इकाई के रूप में देखती है।

यह शोध-पत्र *विभूति* कहानी संग्रह के माध्यम से शिवपूजन सहाय के साहित्य में निहित राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक, सांस्कृतिक और सामाजिक अभिव्यक्ति का विश्लेषण करता है। इसके अंतर्गत यह देखा जाएगा कि किस प्रकार इन कहानियों में राष्ट्रीयता केवल नारे नहीं, बल्कि जीवन मूल्यों और व्यवहारिक आदर्शों के रूप में चित्रित होती है।

उद्देश्य

इस शोध का समग्र उद्देश्य यह है कि शिवपूजन सहाय के *विभूति* कहानी संग्रह के माध्यम से भारतीय राष्ट्रीय चेतना के सांस्कृतिक, सामाजिक और नैतिक पक्षों का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए यह स्थापित किया जा सके कि साहित्य न केवल सामाजिक दर्पण है, बल्कि वह राष्ट्रनिर्माण और जनचेतना के संवाहक के रूप में भी कार्य करता है।

कहानी विवेचन

राष्ट्र' शब्द सुनते ही स्वतः एक बिजली शरीर के अंदर कौंध जाती है, शायद इसकी वजह मनोवैज्ञानिक चेतना है हमें बचपन से 'राष्ट्र' के संबंध में ऐसी शिक्षा दी जाती है कि सारी भौतिक सुविधाएँ एक तरफ और राष्ट्र के प्रति समर्पण दूसरी तरफ। आज इस वैश्विक परिवेश में "राष्ट्र" का आधार और मजबूत दिखाई देने लगा है, क्योंकि इसका क्षेत्र पहले से काफी व्यापक हो चला है। प्राचीन संस्कृत साहित्य में 'राष्ट्र' शब्द की व्युत्पत्ति 'राजृ' या 'रासृ' में 'ष्ट्रन्' प्रत्यय लगाने से हुआ है। अर्थात् 'राष्ट्र' वह भूखण्ड है जिसका अपना अस्तित्व हो, जो विदेशियों से पदाक्रांत न हो, और स्वतंत्र सत्ता रखता हो। सामान्य दृष्टि से देश भी इसी अर्थ का वाचक है

विश्वकोश में 'राष्ट्र' पर प्रकाश डालते हुए लिखा गया है कि "उस जन समुदाय को राष्ट्र की संज्ञा से विभूषित किया जा सकता है, जो एक ही देश में बसता हो अथवा एक ही देश में राज्य या शासन के अंतर्गत एकताबद्ध हो।"[1]

रामविलास शर्मा के अनुसार "राष्ट्र का सीधा संबंध जन से है: वैदिक काल से जनपद उन जनों के निवास थे, जो रक्त संबंध के आधार पर संबद्ध थे। प्रत्येक जन (कबीले ट्राइब) के सदस्य वही लोग होते थे; जो परस्पर एक दूसरे के संबंधी थे।"[2] सामंत युग में जनपद वर्णव्यवस्था पर आधारित थे। इन कबीलों के आधार पर रक्त संबंध नहीं था। पूँजीवाद के आगमन से जाति बनी। जाति से लघुजाति और महाजावि का विकास हुआ। 'अनेक जनों से बने हुए' संघ को हम गण कहें तो जन के बाद गण, गण से लघु जाति और लघुजाति से महाजाति का विकासक्रम निश्चित होता है।

इस प्रकार यह ज्ञात होता है कि जाति, लघुजाति और महाजाति आदि एक समाज का निर्माण करते हैं राष्ट्र और समाज के संबंध का मुख्य कारण जन की भावनाएँ हैं। राष्ट्र के प्रतिजन की भावनाएँ राष्ट्रीयता कहलाती है।

व्यक्ति

परिवार

जन (कबीला)

गण (कबीलों का समूह)

लघुजाति

महाजाति समाज- राष्ट्र - राष्ट्रीयता वस्तुतः व्यक्ति का 'स्व' से 'पर' की ओर उन्मुख होना ही राष्ट्रीयता का परम सिद्धांत है।

आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी ने भी राष्ट्र शब्द कि व्याख्या इस प्रकार की है "राष्ट्र केवल सीमाओं और जनसंख्या के समुच्चय का नाम नहीं है, उसके साथ परिस्थितियों के एक विशिष्ट आयाम और एक विशिष्ट इतिहास का भी योग होता है। राष्ट्र एक व्यक्ति के सदृश ही है।"[3] इस प्रकार राष्ट्र में प्रमुख रूप से भौगोलिक राजनैतिक और सांस्कृतिक इकाईयाँ समाहित रहती हैं।

आधुनिक युग में विद्वानों ने राष्ट्र और राज्य को एक सदृश स्वीकारते हुए राष्ट्र को भी निश्चित भू-भाग, जनसंख्या, सरकार और सम्प्रभुता जैसे ही तत्वों से जोड़कर देखा है।

किसी भी राष्ट्र में राष्ट्रीय चेतना की संभावना की जा सकती है। दरअसल, देश एक सीमित भू-भाग होता है, जबकि राष्ट्रीयता की राष्ट्रीय चेतना अत्यधिक व्यापक होती है। इसलिए राष्ट्रीय चेतना को सरल तत्व मानकर उसे कुछ शब्दों में आबद्ध कर देना अन्याय होगा। वस्तुतः यह कोई ठोस पदार्थ न होकर एक भावना है, जिसे अनुभव किया जा सकता है।

वस्तुतः 'चेतना' एक बोधगम्य अवस्था है, जिसका संबंध मनोविज्ञान से है। यह हमारे तत्कालिक अनुभवों, सोच, इच्छा, भावनाओं पर निर्भर करती है। यानि हम अपने और परिस्थिति दोनों का बोध करते है। बाबू गुलाब राय ने राष्ट्रीय चेतना को एक भाववृत्ति (सेंटीमेंट) के रूप में माना है। उनके अनुसार राष्ट्रीय चेतना से तात्पर्य देशभक्ति में राग के साथ-साथ शौर्य एवं उत्साह का भाव होना है। वही राम विलास शर्मा का प्राचीन काल में भारतीय राष्ट्रीय चेतना के संबंध में यह कथन बहुत महत्वपूर्ण है "यूरोप में ऐसा कोई देश नहीं है, न समूचे यूरोप की कोई परम्परा ऐसी है, जहाँ प्राचीन भाषा से लेकर विभिन्न आधुनिक भाषाओं तक में अनेक युगों और अनेक प्रदेशों में इस प्रकार किसी राष्ट्र का स्तवन किया गया है। अब इस बारे में कोई संदेह नहीं रह जाना चाहिए कि प्राचीन काल में यहाँ अखिल भारतीय राष्ट्रीय चेतना विद्यमान थी, वह उस युग में थी, जिसे मध्यकाल कहते हैं और वह आधुनिक काल में है। यह भावना उस समय थी, जब राष्ट्र के अंतर्गत गुण समाज और लघुजातियाँ है, जो सामाजिक विकास क्रम में नये जातीय जीवन की ओर अग्रसर हो रही है।"[4]

साहित्य शब्द को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि साहित्य में हित की भावना रहती है। हित की भावना सदा 'स्व' से 'पर' की ओर उन्मुख होने पर ही राष्ट्रहीत की चेतना जागृत होती है। यही से राष्ट्रीयता की राष्ट्रीय चेतना का

The Asian Thinker

Year-6 Volume: III, July-September, 2024 Issue-23 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

उदय होता है। साहित्य समाज की मनोवृतियों का प्रतिबिम्ब होता है और सच्चा समाज राष्ट्रीय चेतना की भावना से परिपूर्ण होता है। इसलिए इन दोनों को पृथक नहीं किया जा सकता।

राष्ट्रीय चेतना में व्यक्तिगत (व्यक्तिगत) संकीर्णता को 'राष्ट्र' के हित में समष्टिगत कार्य करना ही राष्ट्रीय चेतना का संचार करना है। राष्ट्र की चेतना का स्वरूप परिवर्तनशील है, परंतु इसके कुछ ऐसे तत्व भी हैं, जो समयानुसार प्रमुख और गौण रूप धारण कर लेते है। भारतीय राष्ट्रीय चेतना के नियामक तत्व वंशगत एकता, भौगोलिक एकता, सामाजिक अनुभूति, धार्मिक संगठन, सांस्कृतिक परम्पराएँ आदि है। पराधीनता के काल में इसका मुख्य उद्देश्य स्वतंत्रता प्राप्ति होता है। 19वीं शताब्दी में विभिन्न सांस्कृतिक आंदोलनों ने राष्ट्रीय चेतना का विकास करने में पूर्ण सहयोग दिया है। यही सांस्कृतिक राष्ट्रीयता ही कालांतर में राजनैतिक राष्ट्रीय चेतना का निर्माण करती है।

राष्ट्रीय चेतना जहाँ सीमा का अतिक्रमण कर जाती है, वहाँ घातक तत्व भी बन जाती है। दूसरे शब्दों में जहाँ स्वार्थ की भावना आ जाती है, वहाँ ईर्ष्या और प्रतिद्वन्द्विता बढ़ जाती है, जो अन्य राष्ट्रों के प्रति घृणा की भावना पैदा करती है। भारत में प्राचीन काल से ही "वसुधैव कुटुम्बकम" मानने की प्रवृत्ति रही है। प्राणि मात्र का कल्याण और उसके सुख शांति के बारे में सोचना ही राष्ट्रीय चेतना की पराकाष्ठा है।

साहित्य राष्ट्रीय चेतना को सुरक्षित रखने और उसको संवर्द्धित करने में सहायक होता है। यह राष्ट्रीय चेतना का मार्ग निर्देशक है। वस्तुतः साहित्य का राष्ट्रीय चेतनाओं में महत्वपूर्ण योगदान है, इसलिए साहित्य को राष्ट्रीय चेतना का पोषक अंग कहा जा सकता है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि सत्ता सम्पन्न राज्य की सर्वांगीण उन्नत्ति एवं प्रगति, सामूहिक विकास तथा सुरक्षा की वह सोच जो किसी राष्ट्र को साहित्य के माध्यम से गौरवान्वित करे और उसकी चेतना राष्ट्र के प्रति समर्पित हो वह राष्ट्रीय चेतना कहलाती है।

इसी प्रकार की राष्ट्रीय चेतना का सांस्कृतिक पक्ष शिवपूजन सहाय की "विभूति कहानी संग्रह" में झलकती है। इस संग्रह में राष्ट्रीय चेतना का उभार निरा एकाकी नहीं है, बल्कि व्यापक फलक है, जिसमें पुरूष, महिलाओं के साथ नौजवान / नवयुवतियाँ के योगदान का भी कारूणिक वर्णन है।

विभूति कहानी संग्रह के 'मुण्डमाल' में चूड़ावतजी के राष्ट्रीय समर्पण का जहाँ अद्भुत उद्योग है, उससे कमतर योग उनकी नवविवाहिता स्त्री का भी नहीं है। चूड़ावतजी अपने राष्ट्र की लाज बचाने हेतु उत्सर्ग को तैयार हैं, सत्य की रक्षा हेतु पुर्जा-पुर्जा कटने को उत्सुक हैं। किन्तु उनका मन नवविवाहिता में रमा होता है। जिससे उसकी स्त्री परिचित है और कहती है कि "सत्य और न्याय की रक्षा के लिए लड़ने जाने के समय सहज-सुलभ सांसारिक सुखों का मोह अच्छा नहीं। भारत की महिलाए स्वार्थ के लिए सत्य का संहार करना नहीं चाहती। वीरों का रक्तमांस का शरीर अमर नहीं होता, बल्कि उनका उज्ज्वल यशोरूपी शरीर ही अमर होता है।"[5] (मुण्डमाल, P-105, 106)

इस प्रकार हाड़ा रानी नाना प्रकार से खुद में रमे पति को शौर्यवर्द्धन का मार्ग प्रशस्त करती है और अंत में स्वाभिमान, राष्ट्र-रक्षा हेतु चिह्न स्वरूप सिर काटकर पति को समर्पित कर देती है, ताकि युद्ध में शतप्रतिशत योगदान दे सके।

Year-6 Volume: III, July-September, 2024 Issue-23 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

राष्ट्रीय चेतना के संदर्भ में विभूति कहानी संग्रह के अन्तर्गत मुण्डमाल जैसी कहानी शिवपूजन सहाय पाठकों के बीच लाकर यह सिद्ध करते हैं कि पुरूष के साथ-साथ भारत की स्वतंत्रता में स्त्रियों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। गांधी जी ने भी कहा था कि भारत को यदि स्वतन्त्र करना है तो स्त्री और पुरूष दोनों को अपने माध्यम से प्रयास करना होगा। इस कहानी में भी हाड़ा रानी जैसी महिला को उदहारण के तौर पर प्रस्तुत कर शिवपूजन सहाय कहीं ना कही गांधी जी के समीप नज़र आते है। मुण्डमाल कहानी में हाड़ा रानी कहती हैं कि- "प्राण प्यारे ! 'इतना अवश्य याद रखिए कि छोटा बच्चा चाहे आसमान छू ले, सीपी में सम्भवतः समुद्र समा जाए, हिमालय हिल जाए, तो हिल जाए; पर भारत की सती देवियाँ अपने प्रण से तनिक भी नहीं डिग सकती।’’[6]

राष्ट्रीय चेतना को शिवपूजन सहाय अपनी कहानी प्रायश्चित के माध्यम से केवल जगाना नहीं चाहते अपितु उस समय भारत के नागरिक विदेशी आतताई से मुकाबला करने में असमर्थ थे। इसीलिए उनका मानना है कि उस समय अंग्रेज और उनके खिद्मतदारों के द्वारा भारतीयों को सताया जा रहा था। पुरूष के साथ-साथ स्त्रियों के साथ भी दुर्व्यवहार किया जा रहा था। यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि भारत की संस्कृति में आम तौर पर पुरूष महत्वपूर्ण रहा है लेकिन यहाँ अपनी इज्जत व शान-औ-शौकत की खातिर स्त्रियों का सम्मान भारत की संस्कृति की रग-रग में बसा हुआ है। इस कहानी में भी गौरे सिपाही ने स्त्री के साथ बदसलूकी करने का प्रयास किया है और उसका पति निहत्था, चुपचाप देखने के सिवा कुछ नहीं कर पा रहा। भारतीय संस्कृति में स्त्री का सम्मान सर्वोपरि है। इसलिए वह अपने प्राणों का उत्सर्ग कर देती है। "एक निहत्थे हिन्दुस्तानी को निपट भयातुर देखकर वह मदान्ध मुस्कुराने लगा और फिर मदनावेशपूर्ण दृष्टि से हमारी पत्नी की ओर देखकर एक आलिंगनाभिलाषी विलासी की तरह उसने अपनी भुजाओं को पसारा। हमारी पत्नी ने क्रोध पर वश होकर उस कामान्ध के शिथिल हाथ के झयार के साथ पिस्तौल छीन ली और भटपट उसे अपनी ही छाती से भिड़ाकर दबा दिया।"[7]

शिवपूजन सहाय अपनी कहानी में नवयुवकों को सचेत करते है। उन्हें स्वावलम्बन की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करते है। किसी भी राष्ट्र का विकास बिना स्वावलम्बन के सम्भव नहीं है। जिस देश के युवा दृढ़ संकल्प के साथ अपने आप को मजबूत बना लेंगें उस देश की नींव अन्दर से मजबूत होती जाती है।

शिवपूजन सहाय दूर का दृष्टिकोण अपनाते हैं। वो केवल समसामयिक मुद्दों से जुड़ कर सीमित नहीं होते। युवाओं का स्वावलम्बी होना देश को हमेशा के लिए मजबूत बनाने की दिशा में आधारभूत कदम है। सच्चा राष्ट्रवाद तब तक देश में नहीं आ सकता जब तक कि युवा सचेत नहीं है। शिवपूजन सहाय कुंजी कहानी में कहते हैं- "संन्यासी- तुम जैसे नवयुवक को तो स्वावलम्बी होना चाहिए। तुम कुलियों का मुँह क्यों ताकते थे? क्या दूसरे पर आश्रित रहकर तुम सुखी होना चाहते हो?"[8]

निश्चित रूप से दूसरों पर आश्रित रहकर कोई भी व्यक्ति सुखी नहीं रह सकता। पराश्रय किसी भी राष्ट्र राज्य को अंधेरे की ओर ले जाता है। इसलिए स्वावलम्बन का साथ अपना काम अपना हाथ ही राष्ट्र को आगे बढ़ा सकता है। यही सच्ची राष्ट्रीय चेतना है।

शिवपूजन सहाय की *विभूति* कहानी संग्रह में राष्ट्रीय चेतना का स्वर केवल वैचारिक न होकर व्यावहारिक और चरित्रनिष्ठ भी है। इस संग्रह की प्रमुख कहानियाँ — *मुण्डमाल*, *प्रायश्चित* और *कुंजी* — भारतीय समाज के विविध पक्षों को उद्घाटित करती हैं और उनमें राष्ट्रीय चेतना के भाव को सशक्त रूप से प्रतिबिंबित करती हैं। इन कहानियों का विवेचन निम्न तथ्यों के आधार पर किया जा सकता है:

1. राष्ट्र के लिए स्त्री-बलिदान की परंपरा: 'मुण्डमाल'

- *मुण्डमाल* कहानी में हाड़ा रानी का चरित्र एक प्रेरक आदर्श बनकर सामने आता है। वह न केवल अपने पति को युद्ध के लिए प्रेरित करती है, बल्कि उसका मोह दूर करने के लिए स्वयं का सिर काटकर चिह्न-स्वरूप समर्पित कर देती है।
- यह कथा भारतीय स्त्रियों की राष्ट्रीय चेतना, आत्मबलिदान और सत्यनिष्ठा को उजागर करती है।
- हाड़ा रानी की यह उक्ति — "भारत की सती देवियाँ अपने प्रण से तनिक भी नहीं डिग सकतीं" — भारतीय नारी की राष्ट्रभक्ति और मानसिक दृढ़ता का प्रतीक बन जाती है।

2. विदेशी अत्याचार और आत्मसम्मान की रक्षा: 'प्रायश्चित'

- *प्रायश्चित* कहानी एक साधारण भारतीय परिवार की त्रासदी के माध्यम से औपनिवेशिक भारत में स्त्रियों के सम्मान पर पड़ने वाले संकट को दर्शाती है।
- अंग्रेज सैनिक द्वारा स्त्री का अपमान करने का प्रयास और उसका पिस्तौल छीनकर स्वयं को गोली मार लेना — यह दृश्य न केवल स्त्री की अस्मिता का प्रतीक है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति में नारी की गरिमा और उसकी रक्षा की परंपरा को भी रेखांकित करता है।
- यहाँ राष्ट्र की रक्षा स्त्री अस्मिता की रक्षा से जुड़ी हुई है।

3. युवा वर्ग में स्वावलंबन का आह्वान: 'कुंजी'

- *कुंजी* कहानी में एक नवयुवक पात्र को दिखाया गया है, जो दूसरों पर आश्रित रहने की मानसिकता रखता है। संन्यासी उसे चेताता है — "दूसरे पर आश्रित रहकर तुम सुखी होना चाहते हो?"
- यह संवाद भारत के युवाओं के आत्मनिर्भर बनने का संदेश देता है, जिससे एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण संभव होता है।
- शिवपूजन सहाय स्पष्ट रूप से युवाओं को प्रेरित करते हैं कि राष्ट्र निर्माण का आधार स्वावलंबन है, न कि पराश्रय।

4. राष्ट्रीय चेतना का बहुआयामी स्वरूप

- विभूति संग्रह में राष्ट्रीय चेतना को केवल पुरुषों तक सीमित नहीं किया गया है। शिवपूजन सहाय ने स्त्रियों, युवाओं, ग्रामीण नागरिकों और साधारण पात्रों को भी राष्ट्रीय चेतना का वाहक बनाया है।

The Asian Thinker

- यह चेतना केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं, बल्कि सांस्कृतिक गौरव, आत्मसम्मान, सामाजिक न्याय और परंपरा की रक्षा तक विस्तारित है।

5. सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और परंपरा का सम्मान

- कहानियों में यह स्पष्ट रूप से झलकता है कि शिवपूजन सहाय परंपरा और आधुनिकता के संतुलन को बनाए रखते हैं। वह परंपरा से कटे राष्ट्र को कमजोर मानते हैं और भविष्य से विमुख राष्ट्र को अंधकारमय।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि शिवपूजन सहाय परम्परा और भविष्य दोनों को अपनी कहानियों में साथ-साथ लेकर चलते हैं। परम्परा और भविष्य की सम्भावनाओं के संसर्ग से ही बेहतर मार्ग बनता है। क्योंकि परम्परा के बिना जो राष्ट्र विकास करता है वो अपनी नींव से कट जाता है, और जो भविष्य से मुँह चुराता है वो कभी आगे बढ़ ही नहीं पाता।

शिवपूजन सहाय की कहानियों में राष्ट्र भक्ति और राष्ट्रीय चेतना परम्परा और भविष्य की सम्भावनाओं, दोनों का साथ-साथ वहन करती है। राष्ट्र की वेदी पर अपनी जान देने वाले पात्र, जो कि अन्य युवाओं के लिए प्रेरणा बनते हैं। ऐसे पात्र इनकी कहानियों में मिलते हैं। राष्ट्रीय चेतना के विकास से साम्प्रदायिक एकता का विकास होता है। यह हमारी राष्ट्रीय चेतना और शिवपूजन सहाय की राष्ट्रीय चेतना में स्थान-स्थान पर दृष्टिगोचर होता है।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शिवपूजन सहाय की *विभूति* कहानियाँ भारतीय राष्ट्रीय चेतना के बहुआयामी स्वरूप की अभिव्यक्ति हैं। उन्होंने अपने पात्रों के माध्यम से एक ऐसे राष्ट्र की कल्पना की है, जिसमें स्वाभिमान, संस्कृति, स्त्री-सम्मान और स्वावलंबन प्रमुख स्तंभ हैं। राष्ट्रीय चेतना केवल राष्ट्र की रक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें सामाजिक न्याय, आत्मबलिदान और सांस्कृतिक गौरव का समन्वय भी निहित है। अतः यह संग्रह साहित्य और राष्ट्र के आत्मीय संबंध का सशक्त उदाहरण है।

शोध संदर्भ

1. शर्मा, र. व. (2000). *भारतीय संस्कृति और राष्ट्रवाद*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
2. वाजपेयी, न. द. (1996). *साहित्य और संस्कृति*. वाराणसी: हिन्दी साहित्य संस्थान.
3. राय, ब. ग. (1983). *भारतीय मानस और संस्कृति*. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन.
4. सहाय, श. (1954). *विभूति (कहानी संग्रह)*. पटना: साहित्य सम्मेलन.
5. गांधी, एम. (1927). *हिंद स्वराज*. अहमदाबाद: नवजीवन ट्रस्ट.
6. त्रिपाठी, र. (2005). *राष्ट्रीय चेतना और हिन्दी कथा साहित्य*. दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन.

The Asian Thinker